गुरु नानक – सबद १९

असंख जप असंख भाउ ॥

जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ३

असंख जप असंख भाउ ॥
असंख पूजा असंख तप ताउ ॥
असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥
असंख जोग मनि रहहि उदास ॥
असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥
असंख सती असंख दातार ॥
असंख सूर मुह भख सार ॥
असंख मोनि लिव लाइ तार ॥
कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥

सार: विविध दृष्टिकोण हमें याद दिलाते हैं कि सभी परंपराएँ और रास्ते अतुलनीय हैं। वह हमें केवल हमारे जीवन जीने के तरीक़े पर निर्भर रहने के बजाय परख कर प्रकृति की अद्भुत ऊर्जा को अपना कर ब्रह्मांड की समझ प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

असंख जप असंख भाउ ॥
ध्यान के असंख्य तरीक़े हैं और भक्ति के भी अनगिनत तरीक़े हैं।

असंख पूजा असंख तप ताउ ॥
पूजा करने के असंख्य तरीक़े हैं, तपस्याओं के भी अनगिनत तरीक़े हैं।

असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥
अनगिनत धर्मग्रंथ हैं और उन्हें पढ़ने के अनगिनत तरीक़े हैं।

असंख जोग मनि रहहि उदास ॥
असंख्य तपस्वी हैं जो वैराग्य का अभ्यास करते हैं।

असंख भगत गुण गिआन वीचार ॥
असंख्य भक्त हैं जो ज्ञान और चिंतन से सदगुणी बनते हैं।

असंख सती असंख दातार ॥
असंख्य लोग हैं जो आत्म-संयम का अभ्यास करते हैं। उदार दान देने वाले असंख्य हैं।

असंख सूर मुह भख सार ॥
असंख्य वीर योद्धा हैं जो संघर्ष के परिणाम भुगतते हैं।

असंख मोनि लिव लाइ तार ॥
असंख्य ऋषि-मुनि हैं जो लगातार एकाग्रता से मौन रहते हैं।

कुदरति कवण कहा वीचारु ॥
प्रकृति में विविधता की शक्ति को कैसे समझा जा सकता है?

वारिआ न जावा एक वार ॥
इसकी विशालता को एक पल के लिए भी समेटा नहीं जा सकता।

जो तुधु भावै साई भली कार ॥
जो कुछ भी प्रकृति के नियमों द्वारा निर्धारित है वह सार्वभौमिक कल्याण के लिए उत्कृष्ट है।

तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥
सर्वव्यापी चेतना अनंत और निराकार है। (१७)

तत्त्व: गुरु नानक कहते हैं कि प्रकृति में अनगिनत रूप हैं, हर एक का जीवन जीने का अपना अनूठा तरीक़ा है। सृष्टि की विशालता और जटिलता हमारी समझ से बाहर है। सभी रूप क़ुदरत

के समान नियमों के अधीन हैं, जो सर्वव्यापी चेतना के माध्यम से शासित होते हैं। यह अंतर्संबंध, विविधता में एकता को परिभाषित करता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com